समकालीन हिन्दी कविता में हिंसा और प्रेम के रूप
(विशेष संदर्भ: वीरेन डंगवाल)

हिंदी विषय की पीएच.डी उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध विषय की प्रस्तावित

रूपरेखा

अनुसंधित्सु

मेघा शर्मा

शोध निर्देशक

डॉ प्रेम शंकर सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर

हिंदी विभाग, कला संकाय

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टिट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)

दयालबाग, आगरा-282005

2022

परिचय-

मेरे पीएचडी शोध कार्य के लिए प्रस्तावित शोध प्रारूप का विषय है- **‘समकालीन हिन्दी कविता में हिंसा और प्रेम के रूप (विशेष संदर्भ: वीरेन डंगवाल)’**

प्रेम एक उदात्त भावना है। प्रेम आत्म से सर्व की ओर ले जाकर संकीर्णताओं से मुक्त करता है। मनुष्य के विकास और सभ्यता निर्माण का इतिहास मनुष्य के सह अस्तित्व की भावना को प्रदर्शित करता है। मनुष्य प्रकृति को, वन्यजीवों को, दूसरे मनुष्यों को, दूसरे क़बीले, राज्य या सत्ता को, तो कभी अपने ही नश्वर शरीर को समझने, इनसे संबंध स्थापित करने और मूल्यों को आत्मसात करने की कोशिश करता रहा है। मानव सभ्यता की कहानी इसी का शब्दांकन भर है। लेकिन आरंभिक जीवन शैली की प्रकृति थोड़ी सरल और समझ में आने वाली थी। उत्तरोत्तर यह जटिल होती गई और आज यह स्थिति है कि मनुष्य उन चीजों के प्रति भी हिंसक और असभ्य व्यवहार कर रहा है, जिनके साथ उसका सह अस्तित्व था। सह अस्तित्व संघर्ष में बदलता है- मनुष्य के लोभ, होड़ व आधिपत्य की भावना के कारण। हिंसा का संकट सभ्यता के विकास के साथ शुरू होता है, जहाँ सभ्यता के विकास से ज्यादा उसके प्रसार की भावना है, आधिपत्य की भावना है। धीरे-धीरे संघर्ष के प्रतिपक्ष की समझ ही समाप्त हो गई है। मनुष्य प्रकृति व वन्य जीवों के साथ-साथ स्वयं दूसरे मनुष्यों पर आधिपत्य चाहता है। यह तनाव संघर्ष और सह अस्तित्व के स्वरूप के बदल जाने का तनाव है। जहाँ मनुष्य जिनके साथ सह अस्तित्व था, उन्हीं से संघर्ष पर आमादा है। दरअसल संघर्ष के इस तनाव के बीच से ही वास्तविक सौंदर्य की निर्मिति होती है। कवि इसकी पहचान करता है इसलिए एक ओर जहाँ वह अपनी पक्षधरता को साबित करता है, वहीं दूसरी ओर प्रतिपक्ष के बरक्स पतिपक्ष का निर्माण भी करता है। कविता की समाजधर्मिता की वास्तविक पहचान यही होती है।

हिंदी कविता के क्षेत्र में सन् १९६० के बाद लिखी कविताओं के लिए ‘समकालीन’ शब्द का प्रयोग रूढ़ हो चला, जिसमें सातवें-आठवें दशक की कविता भी आती है। समकालीन हिन्दी कविता के नामकरण के बारे में मतभेद हैं, किंतु समकालीन कविता का प्रस्थान बिंदु सन् १९८० के आसपास माना जाता है। वास्तव में ‘समकालीनता’ का

सीधा आशय है- 'अपने समय के प्रति ईमानदार होना'। समकालीन कविता वास्तविक रूप में सन् १९७५ के आपातकाल के अराजक विद्रोह और दमन के बाद प्रतिरोध की चेतना को आगे लेकर चली वाली कविता है। आपातकाल के बाद दमन एवं संकुचन के बजाय एक नई ऊर्जा, एक नया प्रतिरोध कविता में दिखाई देता है। आठवें दशक से समकालीन कविता की ठीक-ठीक शुरुआत मानने का कारण इस दौर में पूर्ववर्ती प्रतिरोधी चेतना के साथ दमन का प्रतिकार भी शामिल है। इस समय हिंदी कविता अपने पूर्ववर्ती कविता से विभिन्न स्तरों पर स्वयं को अलगा रही थी। यह अलहदापन संवेदना, भाव, विचार, दर्शन एवं भाषा के स्तर पर दिखाई पड़ता है। हिंदी कविता का आठवां दशक विचारधारा के मामले में उसी प्रगतिवादी काव्यधारा से जुड़ा था, जिसने अपनी पूर्ववर्ती काव्यधारा छायावाद से अलग यथार्थ पर कविताएं लिखीं। 'गोली दागो पोस्टर' जैसी कविता को लेकर चलने वाले नक्सलवादी कविता आंदोलन के ताप को अपने साथ लेकर चलते हुए, आपातकाल के दमन को झेलते हुए जो कविता आगे बढ़ती है, उसे समकालीन कविता कहा जाने लगा।

समकालीन हिंदी कविता सकारात्मक मानव मूल्यों के साथ ही मुनष्य को समग्रता में आत्मसात कर चलती है। मनुष्य को तोड़ने वाली हिंसा और उसके विकास की दिशा को रोकने वाली साम्राज्यवादी ताकतों के खिलाफ सृजनात्मक मूल्यों को प्रश्रय देती है। मनुष्य की गाथा इन तमाम स्थितियों से लड़ने की रही है और आज भी मनुष्य इसमें सकारात्मक हस्तक्षेप का स्वर है। **समकालीन हिन्दी कविता की मूल शक्ति है- मानवीय संवेदना, करुणा, दया, अहिंसा, मानवाधिकार के तत्व, लोकतांत्रिक जीवन मूल्य।** शमशेर बहादुर सिंह, मुक्तिबोध, रघुवीर सहाय, नागार्जुन, राजकमल चौधरी, सुदामा पांडे धूमिल जैसे कवियों के प्रभाव व रचनाएं इस कविता में स्पष्ट दिखाई पड़ते हैं।

वीरेन डंगवाल आठवें दशक की चेतना के कवि हैं। कविता के क्षेत्र मे उनका प्रवेश सातवें दशक में हुआ। यही वह समय है जब समकालीन हिंदी कविता की पृष्ठभूमि हिंदी साहित्य में तैयार होने लगी थी। नक्सलबाड़ी आंदोलन की आग से उभरी हिन्दी कविता का आवेग कुछ मंद पड़ रहा था। राज्य दमन और वैचारिक विभ्रम से क्रांतिकारी शक्तियों मे आत्म मंथन के दौर शुरू हो गए थे। प्रतिबद्धताएं अपना रूप बदल कर सामने आ रही थी। सत्ताधारी

वर्ग भी खुद को पुन:संगठित कर रहा था। समकालीन हिंदी कविता में वीरेन डंगवाल ने जिंदगी के बेहद मामूली वाकयों में मानवीय महत्ता के तत्वों की शिनाख्त की। आठवें दशक की संवेदना को लेकर नौवें दशक की बाजारू चकाचौंध और अमानवीय घटाटोप का मुकाबला किया। **कविता की रचना शिल्प और बुनावट में एक फक्कड़पन और लापरवाही का शिल्प चुनते हुए उन्होंने मानवीय मूल्यों के सर्वाधिक बहुमूल्य सार तत्व व समाज में व्याप्त संरचनात्मक हिंसा पर अपनी पैनी निगाह बनाए रखी।** वे बाज़ार की संस्कृति के लोकप्रियतावाद को एक प्रतिबद्ध लोक चेतना से जवाब देते हैं। वीरेन डंगवाल ने पाब्लो नेरुदा, बर्टोल्ट ब्रेख्त, वास्को पोपा, रोजेविच और नाज़िम हिकमत के कुछ अनुवाद भी किए हैं। उनके गहन अध्ययन और संवेदनशील होने का परिणाम ही है कि उनकी कविताओं में कहीं दिनकर का ओज है, कहीं शमशेर सा भाषायी सौन्दर्य है, कहीं नागार्जुन सा लोक तत्व सांसे लेता है, कहीं निराला सी भावुकता है, तो कहीं देवताले सी शाब्दिक व्यंजना। उन्होंने एकदम नए शिल्प, अनूठी लोकप्रिय भाषा और गैर परंपरागत विषयों के जरिये मनुष्य विरोधी विचारों का प्रतिपक्ष रचा। लेकिन ख़ालिस अपने अंदाज़ में-

> "**गरज रहे हैं घन-घमण्ड के नभ की फटती है छाती/अंधकार की सत्ता चिल-बिल चिल-बिल मानव जीवन/जिस पर बिजली रह-रह अपना चाबुक है चमकाती/संस्कृति के दर्पण मेमें जो शक्लें हैं मुस्काती/इनकी असल समझना साथी/अपनी समझ बदलना साथी**"

प्रेम के सही अर्थ को समझने के लिए ज़रूरी है, हिंसा को समझा जाए। किसी भी तरह की हिंसा को उसके वास्तविक रूप में रेखांकित करना उसके प्रति संवेदनशीलता को दर्शाता है। हिंसा सिर्फ़ दैहिक नहीं होती, वह तो उसकी सर्वाधिक स्थूल अभिव्यक्ति है। बुनियादी अर्थ में तो वह हर भावना और चेष्टा हिंसा है, जो व्यक्ति सहित सम्पूर्ण मानवीय चेतना की सृजनमात्मक सम्भावनाओं की अभिव्यक्ति व विकास का दमन करती या उसे बाधा पहुँचाती है। इसलिए चेतना के विकास का अर्थ है मनुष्य का निरंतर अहिंसक होते जाना- निषेधात्मक नहीं विधायी अर्थों में। समकालीन कविता प्रेम को केवल एक वक्तव्य मात्र न मानकर व्यवहार की कसौटी पर कसती है। '**पोथी-पतरा-ज्ञान-कपट से बहुत बड़ा है मानव**', 'अधपकी निमोली जैसा सुंदर वह हरा-पीला चिपचिपा प्यार' जैसी पंक्तियाँ

प्रेम के भिन्न रूपों को रेखांकित करती है। जहाँ वीरेन की अधिकतर कविताओं के प्रेषण बिन्दु हैं - **हत्या के क्षण में जीवन का विदग्ध साक्षात्कार।**

शोध विषय की प्रस्तावना क्षेत्र और उद्देश्य-

प्रेम की अनेक ढंग से व्याख्या की गई है। दार्शनिकों ने प्रेम को तत्व चिंतन का विषय बनाया, भक्तों ने भक्ति का माध्यम, जीव शास्त्रियों के लिए जैविक आकर्षण, मनोविश्लेषकों के लिए प्रेम राग (लिबिडो) के रूप में मनोचिकित्सा का विषय बना, तो समाज शास्त्रियों के लिए समाज में परिवर्तन लाने का एक प्रबल कारक मात्र। साहित्यशास्त्री और कवियों के लिए प्रेम काव्य का सनातन विषय रहा है। दरअसल 'प्रेम' इस तरह ईश्वर प्रदत्त न होकर मनुष्य मात्र की खोज है। युगों के अंतराल में उसका क्रमशः विकास हुआ है। 'प्रेम' और 'हिंसा' दोनों मनुष्य की आत्म रक्षा और उत्तरजीविता की आवश्यकताओं की उपज हैं। इन दोनों के बिना आदिम मनुष्य न तो सामाजिक प्राणी बन सकता था, न ही प्रतिस्पर्धी प्रजातियों से अपनी रक्षा कर सकता था। मनुष्य ने अपने लिए उच्च आदर्शों और जीवन शैली की खोज की। हिंसात्मक प्रवृत्तियों पर सामाजिक नियंत्रण के लिए कुछ स्वार्थ व्यवस्थाएं कीं तथा सह अस्तित्व के भाव को अनेक रूप देने की कोशिश की जैसे- परिवार, धर्म, सामाजिक जिम्मेदारियां, स्थिर जीवन। किंतु जीवन जैसे-जैसे अधिक प्रतिस्पर्धी हिंसक और असुरक्षित होता गया, प्रेम की अपनी जटिलताएं वैसे ही अधिक भयावह होती गयीं। प्रथम दृष्ट्या हर कवि प्रेम का कवि है। समय के साथ हिंसा और प्रेम के रुप बदल गए हैं। **पूरी दुनिया में हिंसा एक ऐसे मोड़ पर आ खड़ी हुई है, जहाँ अधिकाधिक विकास अधिकाधिक असुरक्षा पैदा कर रहा है।** धर्म की हिंसा, जाति की हिंसा, एक तरह की हिंसा माहौल पर पूरी तरह छायी हुई है। ख़बर में हिंसा है, समाज में हिंसा है और टेक्नोलॉजी ऐसी बन गई है कि हिंसा बहुत तेज़ी से फैल रही है। अल्पसंख्यकों, दलितों और आदिवासियों के विरुद्ध हिंसा बढ़ती जाती है। **दुनिया में बढ़ती हिंसा और अन्याय को समकालीन हिन्दी कविता अनदेखा नहीं करती, उसके बरक्स उम्मीद और संभावना, संवाद और सहकार, सृजन और कल्पना की दुनिया खड़ी करती है।**

समकालीन हिन्दी कविता मानवीय जीवन सन्दर्भों की अभिव्यक्ति की कविता है। समकालीन कविता में मूल्य और काल दोनों का समानधर्मी महत्त्व है। काल से संदर्भित करें तो इसे आठवें दशक की कविता कहेंगे और यदि मूल्य के परिप्रेक्ष में मूल्यांकन करें, तब वे समस्त सरोकार व प्रश्न आयेंगे जो मनुष्य तथा समाज के उत्थानार्थ उठाये जाते हैं। डॉ. विश्वम्भरनाथ उपाध्याय लिखते हैं-

> **"समकालीन कविता को पढ़कर वर्तमान काल का बोध हो सकता है क्योंकि उसमें जीते, संघर्ष करते, लड़ते, बौखलाते, तड़पते तथा ठोकर खाकर सोचते आदमी का परिदृश्य है। आज की कविता में काल अपने गत्यात्मक रूप में ठहरे हुए क्षण या क्षणांश के रूप में नहीं। यह काल क्षण की कविता नहीं, काल प्रवाह के आघात और विस्फोट की कविता है।"**

विषमतामूलक समाज को मिटाकर मानवीय समानता के आधार पर देश-दुनिया का निर्माण समकालीन कविता का लक्ष्य है। हिंसा, खून-खराबा को प्रश्रय न देकर कवि मनुष्य को मनुष्य से जोड़ने वाले तत्व प्रेम, करुणा, दया, अहिंसा, सत्य, आत्मीयता, सहानुभूति, सहयोग जैसे महान मानव मूल्यों को संपोषित करता है। जीवन को सकारात्मक दिशा की ओर बढ़ने में मदद करने वाली प्राकृतिक उपादानों को भी समकालीन कविता अहम मानती है। **इसके लिये लाल आतंक और घातक हथियारों की जगह कविता में धरती, आकाश, बादल, बारिश, पेड़, पौधों, फूल, चिड़ियां, नदी, पहाड़, जंगल, सुबह, शाम, दोपहर, वसंत, सर्दी जैसे प्राकृतिक रूपों को विशेष स्थान दिया गया है। वहीं साधारण आदमी की इच्छा, प्रेम, विचार, भाव, सहयोग, संघर्ष, खून-पसीना और बदलते सामाजिक मूल्यों का चित्रण भी है। घर, परिवार, पत्नी, मां, बाप, बच्चे, मित्र, टोला, पड़ोस, खेत-खलिहान, श्रम एवं फसलें मिल कर आज की कविता को पूर्व की अपेक्षा जन सरोकारों से जोड़ता है।** इसमें आतंक और चीख-पुकार या शोर-शराबा नहीं है। यही कारण है कि समकालीन कवियों की कविताएं नारेबाजी एवं बड़बोलेपन का शिकार नहीं हैं। व्यक्ति, समाज, देश एवं दुनिया के अनुभव, चिंतन एवं लोगों के संघर्ष को स्वाभाविक तरीके से सहज एवं सरल भाषा में व्यक्त किया जा रहा है। रघुवीर सहाय लिखते हैं -

"मेरी दृष्टि में समकालीनता मानव-भविष्य के प्रति पक्षधरता का दूसरा नाम है। भविष्य के प्रति, नियति के प्रति नहीं।"

आठवें दशक की हिंदी कविता नई कविता आंदोलन और अकविता आंदोलन से प्रभाव एवं प्रेरणा ग्रहण करते हुए भी सापेक्षिक अर्थों में इन काव्य आंदोलनों के भीतर निहित काव्य दृष्टियों का विरोध करती है और नई काव्य

दृष्टि का प्रवाह भी। निराला, नागार्जुन, शमशेर बहादुर सिंह, मुक्तिबोध, रघुवीर सहाय, राजकमल चौधरी ,सुदामा पांडे धूमिल जैसे कवियों के प्रभाव इस दशक की कविता पर स्पष्ट दिखते हैं। समकालीन हिंदी कविता के इसी परिदृश्य में कई नयी प्रतिभाएं, नयी सोच, विचार, भाव एवं भाषा एवं कविता के साथ उभरी। **इसलिए इस कविता में एक साथ कई पीढ़ियों के कवि राजेश जोशी, आलोक धन्वा, अरुण कमल, मंगलेश डबराल, ज्ञानेंद्रपति, वीरेन डंगवाल, विनोद कुमार शुक्ल, लीलाधार जगुड़ी, चंद्रकांत देवताले, ऋतुराज, हरीशचंद पांडे, कुमारेन्द्र पारसनाथ सिंह, वेणुगोपाल, उदय प्रकाश, अनामिका, निर्मला पुतुल आदि शामिल हैं।** वीरेन डंगवाल लिखते हैं-

> **"हमारी कवि पीढ़ी एक मायने में भारतीय इतिहास के सर्वाधिक विरोधाभासी, विभिन्न और दारुण अनुभव से गुजरनेगुज़रने वाली पीढ़ी है। हमने स्वतंत्रता के निहायत सपनीले उल्लास भरे दौर देखें, स्वप्नों का निर्दयता से रौंदा जाना देखा। वह आदमी को जन्म देने वाली तेजस्वी विचारों से रूबरू हुई। उसने महान आंदोलन देखें और फिर घनघोर अवसाद के साथ बुलंद इमारतों का धराशाई होना भी देखा। देखा कि आतताई कैसे तरह-तरह के बहाने भरकर हमारे महाद्वीप ही नहीं पूरे विश्व की छाती पर लोट रहे हैं और किस तरह प्रजातंत्र का मुखौटा लगाए घुड़सवार हत्यारे दिल्ली तक आ पहुंचे हैं। इतिहास के इस दुर्दांत दौर से गुजरती हुई हमारी ही कवि पीढ़ी थी, जिसने इस सब के बीच की प्रेम प्रतिबद्धता और प्रतिरोध की अपनी टेक को छोड़ा नहीं।"**

वीरेन डंगवाल का लेखन काल १९७० से २०१५ तक रहा। चवालिस वर्ष की उम्र में पहला कविता संग्रह (१९९१) में आया- **'इसी दुनिया में'**, दूसरा संग्रह **'दुष्चक्र में स्रष्टा'(२००२) ११** वर्ष बाद पचपनवें वर्ष की उम्र में प्रकाशित हुए और सन् २००९ में **'स्याही ताल'।** लगभग ढाई सौ कविताएं पैंतालीस वर्ष में वीरेन ने लिखीं। **वीरेन डंगवाल की विशिष्टता इस बात में निहित है कि जहां एक तरफ मुक्तिबोध और शमशेर से चेतना की विराटता और शिल्प की मासूमियत ग्रहण करते हैं, वहीं रघुवीर सहाय एवं धूमिल से ठेठ और तीखे व्यंग्य पैदा करने वाले काव्य संदर्भ रखते हैं।** समकालीन कवि अपनी कविताओं में हिंसा के सही रूपों की वहाँ भी पहचान करते हैं, जहाँ वह अपने न्यूनतम व संगठनात्मक रूप में मौजूद हैं। ये कविताएं हिंसा की संरचनात्मक बुनावट को उधेड़ती हैं। ये कविताएं जिस दौर में लिखी गयीं, वह नेहरू युगोत्तर मोहभंग की सामाजिक-बौद्धिक-राजनीतिक उथल-पुथल, 'वसंत गर्जना' और उसके क्रूर दमन, विश्व स्तर पर वियतनाम युद्ध के विरोध, अमेरिकी की विद्रोही बीट पीढ़ी की अराजकता और काली या अश्वेत चेतना से उबलता हुआ था। वीरेन की संवेदना पर भी इस वैश्विक उभार की गहरी छाप

पड़ी। आलोक धन्वा की **'जनता का आदमी'** और '**गोली दागो पोस्टर',** लीलाधर जगूड़ी की **'बलदेव खटिक'** और वीरेन की **'रामसिंह'** जन संघर्ष की प्रमुख कविताएँ हैं जोकि, जो नाटकों की शक्ल में भी मंचित हुयीं। दरअसल इन कविताओं का मुख्य सरोकार मनुष्य की शोषण-दमन करने वाली शासक शक्तियों का प्रतिरोध करना, क्रांति का स्वप्न जगाना और मानवीय सच्चाई और समानता के संघर्ष की अनिवार्यता को रेखांकित करना है। **जहाँ 'हिंसा' से मतलब कोई एक घटना, कोई क़त्ल, बलात्कार या दंगा ही नहीं है, बल्कि हिंसा का जो पूरा घटना विज्ञान है, पूरी तकनीकी है, पूरा तर्कशास्त्र है, वह है।** वीरेन के यहां समाज के उस तबके का चित्र है जिसमें सर्वहारा समाज और उसके अंतर्विरोध बसते हैं। स्त्री मुद्दे भी हैं, मजदूरों और सत्ता के नए मुहावरे भी।

हिंसा का मतलब है, पूरी तरह संवादहीनता। हिंसा का केंद्रीकरण समाप्त होने के बाद स्वाभाविक है कि हिंसा के क्षेत्र विकेंद्रित हो जाएं और गुंडागर्दी धीरे-धीरे एक जीवन पद्धति बन जाए। वीरेन डंगवाल इस भयानक होते समय के यथार्थ की निर्ममता के साथ चीरफाड़ करते हैं और हिंसा को उसके महीन संरचनात्मक रूपों में रेखांकित करते हैं। सत्ता चाहे राजनीति की हो, चाहे धर्म की, सत्ता के विमर्श से प्रेम की सारी चिंताएँ धीरे-धीरे हटा दी जाती हैं। 'रामसिंह' कैसे एक हथियार में तब्दील होता है, मनुष्य से हथियार। 'रामसिंह' कविता इसे धीरे-धीरे खोलती है। वीरेन की कविता में मृत्यु और जीवन का आमना-सामना बहुत जगहों पर है, लेकिन स्वभाविक सहज मृत्य कहीं नहीं है। कविता में लोकतंत्र का बढ़ता हुआ सैन्यीकरण है। 'चलो, उठो, चलो' की आवृत्ति से मनुष्य से हथियार में तब्दील हो चुके रामसिंह की हथियार से मनुष्य बनने की प्रक्रिया को कविता तेज करती है। सामने पुतले खड़े कर बंदूक़ को दागने से लेकर, इंसान में बन्दूक दागने पर प्रश्नचिन्ह लगाती है। वह रामसिंह को 'ओस के टपकने की आवाज़', 'सूर्य का कांपना', 'आसमान का हवा में फडफड़ाना', 'बर्फ़ के ख़िलाफ़ लोगों और पेड़ों का एक इकट्ठा होना' याद दिलाती है व 'हत्या को भी कला में बदल देने' पर प्रश्न करती है-

'तुम किसकी चौकसी करते हो रामसिंह?
तुम बंदूक के घोड़े पर रखी किसकी ऊँगली हो?'

वीरेन डंगवाल की कविता की बड़ी खासियत 'कुलीनता विरोध' है। हिंसा सिर्फ़ किसी को मारना या शारीरिक रूप से क्षति पहुँचाना मात्र नहीं होता, किसी के प्रति हिक़ारत का भाव रखना भी एक ख़ास तरह की हिंसा है। वीरेन डंगवाल ने कथ्य, शिल्प और भाषा तीनों ही स्तर पर कुलीनता को नकारा है। कुलीनता का विरोध करने के लिए ही वे '**समोसे', 'जलेबी', 'पुदीने'** आदि पर कविताएं लिखते हैं। स्वाद की अभिजात्यता के नकार और देशजता के स्वीकार का तरीक़ा है**- "भारत को बचाकर रखेगी जलेबी**"। **'पीटी ऊषा'** कविता में वीरेन डंगवाल लिखते हैं-

'खाते हुए मुँह से चपचपकी आवाज़ होती है?
कोई ग़म नहीं
जो मानते हैं बे-आवाज़ जबड़े की सभ्यता
दुनिया के सबसे ख़तरनाक खाऊ लोग हैं।'

'रामपुर बाग' के बहाने कवि हमारे गणतंत्र के पचास सालों की पड़ताल करते हैं। इन पचास सालों में हुआ यह है कि हमारे गणतंत्र से गण तो ग़ायब हो गया, मगर तंत्र मज़बूत होता गया, जो मूलतः जनविरोधी है। 'प्रधानमंत्री', 'पीटी ऊषा', 'तोप', 'इन्द्र', 'झंडा', 'फ़ैज़ाबाद-अयोध्या', 'तारंता बाबू से कुछ सवाल', 'वन्या' कविताएँ कवि की प्रतिबद्धता, अन्याय के साधनों और जन-संघर्षों से जुड़ी ऐतिहासिक प्रक्रियाओं को बतलाती हैं। इस कविता में परंपरा से सिर्फ प्रेम नहीं है, परंपरा को बनाने-समझने वाली आलोचक दृष्टि भी है, जो बहुत मामूली सी चीज़ों में देख लेती है कि समझ कैसे बनती है।

समकालीन हिंदी कविताओं में हमारे चारों ओर फेले गहरे अंधेरे और कालेपन के साथ-साथ उजाले की चमक तथा जीवन का नया प्रेम है। **जहां प्रेम केवल निज वेदना तक सीमित नहीं है। वह एक विचार है, जो धीरे-धीरे सामाजिक आलोचना तक ले जाता है।** मुख्यधारा के साथ-साथ स्त्री की अस्मिताएं, दलित, आदिवासी विमर्श और वंचित वर्ग के व्यक्ति के मानवता के कटु अनुभव, दुख, तकलीफ और शोषण के स्वर भी आज की कविता में विशेष महत्वपूर्ण है। **कात्यायनी, अनामिका, सविता सिंह, गगन गिल, तेजी ग्रोवर, सुमन केसरी, नीलेश रघुवंशी, निर्मला पुतुल** जैसी अनेक कवयित्रियों ने समकालीन कविता में स्त्री जीवन को प्रभावित करने वाले सामाजिक, राजनीतिक यथार्थ की संवेदनहीनता और अपने परिवेश के तमाम अमानवीय भेदभाव को दर्ज किया। अनामिका 'चौका' के बहाने औरत

के गुँथ जाने और आटे के भीतर खुद को सानते जाने की भावना को स्वर देती हैं। रजनी तिलक स्त्री और दलित स्त्री के बीच के फर्क को भी कविता का विषय बनाती है। वीरेन डंगवाल की कविताएँ भी 'बेटों की ही तरह बेटियों को भी प्रेम की निर्बाध छूट, उसके लिए कोई ताड़ना- प्रताड़ना नहीं होने' पर बात करती हैं। 'समता के लिए' और 'हम औरतें' कविता में उनकी चिंताएं साफ-साफ हैं।

"रक्त से भरा तसला है रिसता हुआ
घर के कोने अन्तरे में हम हैं
सूजे हुए पपोटे
प्यार किये जाने की अभिलाषा
हम हैं इच्छा वंचित
स्वप्नों की चारागाह में तो चोकड़ियाँ मार लेने दो
कम्बख्तों।"

'कटरी की रुकुमिनी और उसके माता की खंडित गद्यकथा'(कविता) असल में इक्कीसवीं सदी में भारतीय लोकतंत्र और समाज में हिंसा के संरचनात्मक रूपों की असली तस्वीर है। जिसमें जितनी हरियाली है, उतना उजाड़ भी। जितनी ताजगी है, उतनी सड़ांध भी। जितनी ममता, कोमलता और प्यार है, उतनी ही हिंसा और बलात्कार भी। ठाकुरों की ठाकुरेती ख़त्म हो गई है लेकिन पुलिस, माफ़िया और नेताओं की नई ठकुरेती क़ायम हो रही है। वीरेन डंगवाल जी ने इस कविता को 'रुकुमिनी और उसकी माँ की खंडित गद्य कथा' कहा है। इसलिए कवि ने बांग्ला कवि सुकांत भट्टाचार्या को उद्धृत किया है- 'क्षुधार राज्ये पृथ्वी गद्यमय' अर्थात भूख के राज्य में पृथ्वी गद्यमय है।

"रुकुमिनी समझ चुकी है बिना जाने
अपने समाज के कई जटिल और वीभत्स रहस्य
अपने निकट भविष्य में ही
चिथड़ा होने वाले
जीवन और शरीर के माध्यम से
गो कि उसे शब्द 'समाज' का मानी भी पता नहीं।"

समकालीन कविता उपभोक्तावाद, व्यक्तिवाद, अवसरवाद, सुविधावाद के ख़िलाफ़ है। **'तारंता बाबू से कुछ सवाल'** में आदिवासियों की बेदख़ली पर वीरेन डंगवाल सवाल करते हैं। आदिवासी जन और जीवन के प्रति स्पष्ट और

संरचनात्मक हिंसा का ज़िक्र कविता 'नूतन बाईस्कोप' कविता में भी है। 'वन्या' कविता में जंगल में घास जुटाने के लिए जाने वाली स्त्रियों और जंगल के ठेकेदारों के जुल्म को बड़े महीन वर्णनों में ध्वनित किया गया है। वीरेन डंगवाल की कविताएं प्रकृति और उससे जुड़े संसाधनों के प्रति अदृश्य हिंसा को उजागर करती हैं। 'आईआईटी कानपुर' कविता में वे लिखते हैं-

"दुनिया एक ग्लोबल गाँव तो बने
लेकिन सारे गाँव बाहर रहे उस दुनिया के
ये कंप्यूटर करामात हो।
कितने अभागे हैं वे पुल
जो सिर्फ़ गलियारे हैं
जिनके नीचे से गुज़रती नहीं
कोई नदी।"

इसी तरह अन्य समकालीन कवि मंगलेश डबराल की कविता में 'पहाड़' का दर्द और ठेठ स्थानीयता मौजूद है। आलोक धन्वा सामाजिक और मानवीय प्रतिबद्धता का जिक्रज़िक्र करते हुए वाल्ट व्हिटमैन, टॉलस्टॉय, गोर्की, कामू से लेकर त्रिलोचन, मुक्तिबोध और केदारनाथ अग्रवाल आदि का उल्लेख करते हैं। राजेश जोशी वृक्षों का प्रार्थना गीत सुनते हैं, चाँद की आदतों की बात करते हैं, नन्हीं मुनिया की गुनगुनाहट पर कविता लिखते हैं। कामगार बच्चों पर लिखी उनकी कविता में दर्द हर जगह बयां हुआ है-

"कितना भयानक होता, अगर ऐसा होता
भयानक है लेकिन इससे भी ज्यादा यह
कि सारी चीज़ें हैं हस्बेमामूल
पर दुनिया की हज़ारों सड़कों से गुज़रते हुए
बच्चे, बहुत छोटे बच्चे, काम पर जा रहे हैं।"

वीरेन डंगवाल की एक कविता 'एक मोटी कविता' कृषि और किसान की ज़मीन के साथ होने वाली छीनाझपटी पर प्रश्नचिन्ह करती है-

"यों खेत और बोरी में बहुत फ़र्क है /लेकिन खेत बदल जाते हैं बोरियों में/बोरियां गोदामों में /गोदाम बैंक के काग़ज़ों में/बैंक के काग़ज़ तिजोरियों में / और तिजोरियाँ सिरहाने रखी चाबियों में/ खेत चाबियों में बदल जाते हैं / हालाँकि खेत और चाबी में बहुत फ़र्क है।"

केवल यहाँ कविता में मैदान सुदूर खेतों 'तिमिर दारुण मिहिर' में ही रेत व बालू की हत्यारी योजनाएं नहीं मिलतीं। अस्पताल भी कॉर्पोरेट हत्याओं के मैदान हैं। रघुवीर सहाय की कविता का 'रामदास' वीरेन डंगवाल की कविता

'रामदास-दो' में प्रकट होता है। 'रामदास' की हत्या चौराहे पर होती है, तो 'रामदास-दो' की मृत्यु अस्पताल में होती है। संभवत: सघन चिकित्सा कक्षों में दिन-रात जलती रोशनियों के बीच। यहां न कोई हत्यारा है, न कोई हथियार है। मुक्तिबोध ने पूंजीवादी समाज पर 'लकड़ी का रावण' कविता लिखी थी, वीरेन 'लकड़ी का बना वही रावण' में पूंजीवादी व्यवस्था की बढ़ती क्रूरताओं को आइने के सामने खड़ा करते हैं। इस प्रकार वीरेन की कविताएं मशाल 11की तरह, इस मनुष्य बनाम मनुष्य के बंटवारे, बढ़ती हिंसा पर रोशनी डालती है और सवाल करती हैं-

'पर हमने कैसा समाज रच डाला है
इसमें जो दमक रहा, शर्तिया काला है'।

कविता का मूल भाव प्रेम है। समकालीन कवि नागार्जुन, त्रिलोचन, मुक्तिबोध, निराला और केदारनाथ अग्रवाल की परंपरा में आकुंठ भाव से प्रेम कविताएं लिखते हैं। यही भाव मनुष्य को मनुष्य से जोड़ता है। **एक हिंसक और आतताई दौर में 'प्रेम' की समझ पैदा करने के लिए जरूरी है- हिंसा को उसके महीन कारणों में दर्ज करना।** 'नाटक जारी है' (लीलाधर जगूड़ी), 'आत्महत्या के विरुद्ध' (रघुवीर सहाय), 'वे हाथ होते हैं' (वेणु गोपाल), 'भूखण्ड तप रहा है' (चन्द्रकांत देवताले) आदि कविताएँ प्रेम की इसी समझ का विस्तार हैं। **इसीलिए समकालीन कवि 'इस मलिन समय' में उस हर चीज़ की महिमा के गीत गाते हैं, जो उम्मीद दिलाने वाली है और उस हर चीज़ पर चोट करते हैं, जो हमें गुलाम बनाती है, मनुष्य की आत्मा को रौंद डालती है तथा जीवन की महिमा को नष्ट करती है।** उनके लिए **'प्यार एक खोई हुई ज़रूरी चिट्ठी है**। कविता बहुत मामूली, नगण्य कही जाने वाली चीज़ों और लोगों को प्रतिष्ठित करती है, उनके प्रति अपना प्रेम दर्शाती है और इसी के ज़रिए अपनी प्रतिबद्ध और राजनीति को भी तैयार करती है। 'वह एक अजन्में बच्चे को मां की कोख में फुदकते', 'रंगीन गुब्बारे की तरह फूलते-पिचकते कोई शरारत भरा करतब सोचते हुए' महसूस करती है, दोस्तों की गेंद जैसी बेटियों को अच्छे भविष्य का भरोसा दिलाती है और उनका यह प्रेम मनुष्य, पशुओं, पक्षियों, वनस्पतियों, हवाओं, रेलगाड़ियों, फेरी वालों, नींबू, इमली, चूने पाइप के पानी, पोदीने, पोस्टकार्ड, चप्पल और भात जैसी चीज़ों तक को समेट लेती है। इस उदात्त भावना में वीरेन डंगवाल को 'पीटी उषा' के लिए जितना लगाव है, उतनी ही 'स्याही की दवात में गिरी

मक्खी' और 'बारिश में नहाए सुअर के बच्चे' के लिए भी है। यहां तक कि एक पेड़ पर पीले हरे चमकते हुए पत्तों को देखकर वह कहती है-

'पीताभ हरित
खूब उकसे हैं पत्ते
चमकदार
पेड़ों के पास यही एक तरीका है
यह बताने का कि वे भी दुनिया से प्यार करते हैं।'

प्रतिरोध और संघर्ष भी वही कर सकता है जो प्यार करता है। ममता में ही वह शक्ति है जो इंसान को अन्याय के मुकाबिल खड़ा करती है। **"इन्हीं सड़कों से चल कर/ आते रहे हैं आततायी/ इन्हीं पर चल कर आएंगे/ एक दिन/ हमारे भी जन।"** यहां प्रेम विभिन्न तरह के पारिवारिक, सामाजिक दायित्व से युक्त कोई स्वर्गीय भावना ना होकर सांसारिक अनुभव है। **"यह दरअसल उनका प्रेम है/ उनकी आत्मा का संगीत/ जो इन घण्टियों में बसता है/ यह जानकारी केवल मर्मज्ञों के लिए/ साधारण जन तो इसे जानते ही हैं।"**

इन कविताओं में मानवीय बिम्बों और अनुभूतियों का ऐसा जंगल है, जिनमें मनुष्य, पशु-पक्षी, फूल-पत्ते एक साथ मस्ती मारते हैं, थकते हैं, एक दूसरे का सुख-दुख बांटते हैं और एक दूसरे की मुक्ति का सबब बनते हैं। विज्ञान और तकनीकी का विकास मनुष्य के जीवन प्रेम और सौंदर्य प्रेम की उपलब्धियां हैं। 'भाप इंजन की विदाई' और 'कंप्यूटर के स्वागत' में लिखी हुई वीरेन डंगवाल की प्रसिद्ध कविताएं हैं। एक कविता 'परिकल्पित कथा लोकांतर काव्य-नाटिका नौरात, शिवदास और सिरी भोग वगेरह' इसी संघर्ष की कविता है। वीरेन डंगवाल की कविता एक ऐसे समाज की कविता है, जिसमें प्रेम और हिंसा के अंतर को ख़त्म कर दिया जा रहा है। वीरेन प्रेम के पक्षधर थे, इसलिए प्रतिरोध के पक्ष में हो गए। इसी को पहचानते हुए उन्होंने 'शमशेर' नामक कविता में लिखा, **"मैंने प्रेम किए/ इसलिए भोगने पड़े मुझे/ इतने प्रतिरोध।"**

<u>शोध की वर्तमान स्थिति-</u>

शोधकर्ता की अधिकतम जानकारी में **'समकालीन हिन्दी कविता में हिंसा और प्रेम के रूप (विशेष संदर्भ: वीरेन डंगवाल)'** विषय पर काम प्रकाश में नहीं आया है। आश्चर्यजनक बात है कि विभिन्न विद्यालयों के पाठ्यक्रम में

समकालीन हिन्दी कविता और वीरेन डंगवाल की कविताओं को पढ़ाए जाने के बावजूद कविताओं पर इस दृष्टि से पीएचडी हेतु अभी तक कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। प्रस्तुत विषय **'समकालीन हिन्दी कविता में हिंसा और प्रेम के रूप (विशेष संदर्भ: वीरेन डंगवाल)'** पर किया जाने वाला शोध शोधकर्ता का मौलिक प्रयास है।

<u>इस विषय पर अब तक किए गए शोध कार्य से इस शोध की नवीनता-</u>

नौवें दशक में उदारीकरण, निजीकरण तथा बाज़ारवाद की आँधी में मनुष्यता तिनकों की तरह बिखरती गयी। सामाजिक, राजनीतिक संरचनाओं जैसे राज्य, सेना, धर्म, संप्रदाय, जेन्डर, जाति द्वारा जारी हिंसा और मानवीय प्रेम के रूपों में परिवर्तन आए। इस क्षत-विक्षत मनुष्यता को बचाने की कोमल ज़िद से समकालीन कविता तथा वीरेन डंगवाल का काव्य-संसार बनता है। मनुष्य के जीवन के तमाम संकटों और खतरों पर बात करते हुए, वे अपनी कविताओं में मनुष्य के बेहतर जीवन का एक विराट स्वप्न रखते हैं। समकालीन कविता कुछ इसी रूप में अलहदा और अनौखी दिखती है और अपने पूर्ववर्ती कवियों से गहरा संवाद करती है। इस प्रकार मेरी जानकारी में 'समकालीन हिन्दी कविता में हिंसा और प्रेम के रूप (विशेष संदर्भ: वीरेन डंगवाल)**'** विषय पर शोध मेरे विषय की नवीनता है। प्रस्तावित शोध विषय **'समकालीन हिन्दी कविता में हिंसा और प्रेम के रूप (विशेष संदर्भ: वीरेन डंगवाल)'** पर हुआ शोध कार्य हमें हिंसा और प्रेम की द्वंद्वात्मकता की पहचान करने में मदद करेगा। इसका उद्देश्य चौतरफा व्याप्त हिंसा की पहचान कर, उस पर सवाल करना है। विश्व प्रेम की कसौटी तथा सार्वभौमिक मूल्यों के प्रति कविता की जवाबदेही पर बात करना है। साहित्य विशेषकर समकालीन हिन्दी कविता में यह जवाबदेही किसके पास है? कौन सक्रिय रहा है? क्या हिंदी कविता में ऐसे सार्वभौमिक मूल्यों की पहचान करने का सामर्थ्य है, जो समाज की तमाम नकारात्मकताओं से निकालने का रास्ता सुझा सके तथा विश्व मानवता की ओर ले जाकर तमाम तरह की संकीर्णताओं से ऊपर उठने में मदद कर सके...। समकालीन समाज में प्रेम और हिंसा का द्वंद्व, इसकी पहचान और हिंसा जैसे नकारात्मक मूल्यों को खत्म करने का प्रयास करना हिंदी कविता का एक ठोस उद्देश्य होना चाहिए। यही मेरे शोध का उद्देश्य तथा नवीनता है।

शोध प्रविधि-

प्रस्तावित शोध विषय 'समकालीन हिन्दी कविता में हिंसा और प्रेम के रूप (विशेष संदर्भ: वीरेन डंगवाल)' पर शोध कार्य के दौरान हिंदी कविता में हिंसा और प्रेम के स्वरूप को परखने हेतु समाजशास्त्रीय एवं विश्लेषणात्मक प्रविधि का सहारा लिया जाएगा। यह शोध प्रबंध समकालीन कविता के साथ वीरेन डंगवाल की कविता में हिंसा व प्रेम के विभिन्न रूपों पर आधारित है, इसलिए तुलनात्मक विश्लेषण पद्धति और मनोवैज्ञानिक पद्धति का उपयोग अपेक्षित है। इस तरह से इस शोध प्रबंध में मुख्य रूप से शोध की समाजशास्त्रीय, ऐतिहासिक, तुलनात्मक और विश्लेषणात्मक प्रविधि प्रयुक्त होगी।

परिकल्पना-

- हिंसा और प्रेम का अर्थ विस्तार और इनके विविध रूपों का अध्ययन
- विभिन्न समाजों में हिंसा और प्रेम के रूपों का अध्ययन
- भारतीय समाज में हिंसा और प्रेम के रूपों का अध्ययन
- हिंदी साहित्य में हिंसा और प्रेम की अभिव्यक्ति का अध्ययन
- हिंदी कविता में हिंसा और प्रेम के रूपों का अध्ययन
- समकालीन कविताओं में तत्कालीन समाज में व्यक्त हिंसा व प्रेम के बदलते रूपों का अध्ययन
- जेंडर, धर्म, जाति, पर्यावरण, वर्ग संबंधी संरचनात्मक हिंसा के रूपों का अध्ययन
- वीरेन डंगवाल की कविताओं में अभिव्यक्त प्रेम के विविध रूपों का अध्ययन
- स्वाधीनता पश्चात् आठवें दशक की हिंदी कविता की पृष्ठभूमि का अध्ययन
- हिंसा का स्वरूप और उसकी सामाजिक संरचनाओं का विश्लेषण
- कविता की राजनीति और वीरेन डंगवाल की कविताओं का अध्ययन
- साम्प्रदायिकता और समकालीन कविता के रूपों का अध्ययन
- जनांदोलन और वीरेन डंगवाल की कविता में इसके स्थान की व्याख्या

- अन्य समकालीन कवि और वीरेन डंगवाल का रचना संसार का अध्ययन
- वर्तमान संदर्भ में वीरेन डंगवाल के जीवन विवेक एवं काव्य दृष्टि का महत्व
- समकालीन कविता में हिंसा और प्रेम और वीरेन डंगवाल की कविताओं में इसके सरंचनात्मक रूपों का अध्ययन

<u>सम्भावित अध्याय-</u>

1. भारतीय समाज तथा साहित्य में हिंसा और प्रेम का स्वरुप

1.1 हिंसा: अर्थ विस्तार व इसके विविध रूप

1.2 विभिन्न सामाजिक संरचनाओं में मौजूद हिंसा के विविध रूपों की पहचान और उसके कारक चिन्ह

1.3 हिंसा और प्रेम की द्वंद्वात्मकता और उसके अभिव्यक्ति के स्वरूप

1.4 हिंदी साहित्य में प्रेम और हिंसा के विभिन्न रूपों की अभिव्यक्ति की पड़ताल

2. हिंदी कविता का देशकाल हिंसा और प्रेम के संदर्भ में

2.1 आधुनिक हिंदी कविता में हिंसा व प्रेम के रूप

- स्वतंत्रता पूर्व
- स्वतंत्रता पश्चात

2.2 समकालीनता: अर्थ और व्याप्ति

2.3 प्रमुख समकालीन कवि और उनकी कविताओं में हिंसा के रूपों की पहचान

2.4 समकालीन कविता में प्रेम के विविध रूपों का अध्ययन

3. हिंसा और प्रेम की द्वंद्वात्मकता और वीरेन डंगवाल की विशिष्टता

3.1 वैश्विक हिंसा की पहचान

3.2 धर्म, जाति, जेंडर, पर्यावरण, होड़ की राजनीति

3.3 हिंसा के प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूपों की पहचान

3.4 प्रेम की लोकतांत्रिक अभिव्यक्ति के रूप

3.5 प्रेम के द्वारा समाज में निहित हिंसा के अतिक्रमण की विश्व दृष्टि

4. वीरेन डंगवाल की कविता का सांस्कृतिक पक्ष

मानवता, लोकतांत्रिकता, धर्मनिरपेक्षता, व्यक्ति स्वातन्त्र्य और सहिष्णुता,

साम्प्रदायिकता का प्रतिरोध और वीरेन डंगवाल

5. हिंसा और प्रेम का शिल्प

5.1 भाषा में समाई हिंसा

5.2 हाशिए और नगण्य की केन्द्रीयता

5.3 अभिजात्य का प्रतिरोध और देशज शिल्प विधान

5.4 प्रेम की देशजता

उपसंहार

<u>संदर्भ ग्रंथ सूची</u>

आधार ग्रंथ-

1. डंगवाल, वीरेन, इसी दुनिया में, नीलाभ प्रकाशन, प्रथम संस्करण, १९९१
2. डंगवाल, वीरेन दुश्चक्र में सृष्टा, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, २००२
3. डंगवाल, वीरेन, स्याही ताल , अंतिका प्रकाशन, प्रथम संस्करण, २००९
4. कविता वीरेन, नवारुण प्रकाशन, प्रथम संस्करण, २०१८
5. डबराल, मंगलेश, आवाज भी एक जगह है, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, २०००
6. डबराल, मंगलेश पहाड़ पर लालटेन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, १९९७
7. वेणुगोपाल, हवाएँ चुप नहीं रहती, संभावना प्रकाशन, उत्तर प्रदेश, १९८०
8. पांडे, गोरख, जागते रहो सोने वाले, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, १९८३

9. देवताले, चंद्रकांत, आग हर चीज में बताई गई थी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, १९८७

10. देवताले, चंद्रकांत, उसके सपने, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, १९९७

11. सक्सेना, नरेश समुद्र पर हो रही है बारिश, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, २००१

12. आलोकधन्वा, दुनिया रोज बनती है, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, २००० (प्रथम संस्करण, १९९८)

13. जोशी, राजेश, एक दिन बोलेंगे पेड़, संभावना प्रकाशन, उत्तर प्रदेश, १९८०

14. कमल, अरुण सबूत, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, १९९९

15. प्रकाश, उदय, रात में हारमोनियम, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, १९९८

16. रावत, भगवत, सच पूछो तो, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, १९९६

17. रावत, भगवत, हमने उनके घर देखे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, २०००

18. अनामिका, गलत पते की चिठ्ठी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, २००४

19. पुतुल, निर्मला, नगाड़े की तरह बजते शब्द, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, २००४

20. कुमार, विकल, एक छोटी-सी लड़ाई, संभावना प्रकाशन, उत्तर प्रदेश, १९८७

21. कुमार, विकल, रंग खतरे में हैं, चित्रलेखा प्रकाशन, उत्तर प्रदेश, १९८७

22. ऋतुराज, अबेकस, संभावना प्रकाशन, उत्तर प्रदेश, १९८२

सहायक ग्रंथ-

1. संपादक. शंकर, प्रेम, रहूंगा भीतर नमी की तरह, सांस्कृतिक संस्कृत प्रकाशन, प्रथम संस्करण, २०१६

2. संपादक. राजकिशोर, हिंसा की सभ्यता और उसके रूप, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण, २०००

3. कुमार, आशुतोष, समकालीन कविता और मार्क्सवाद, शिल्पायन प्रकाशन, प्रथम संस्करण, २०१०

4. देवताले, चन्द्रकान्त, मुक्तिबोध कविता और जीवन विवेक, राधाकृष्ण प्रकाशन, पहला संस्करण, २००३

5. सिंह, नामवर, कविता के नए प्रतिमान, राजकमल प्रकाशन, पाँचवी आवृत्ति, २०००

6. डबराल, मंगलेश, कवि का अकेलापन, राधाकृष्ण प्रकाशन, पहला संस्करण, २००८

7. श्रीवास्तव, परमानन्द, समकालीन कविता का व्याकरण, शुभदा प्रकाशन, प्रथम संस्करण, १९८०

8. जोशी, राजेश, एक कवि की नोटबुक, राजकमल प्रकाशन, पहला संस्करण, २००४

9. जोशी, राजेश, एक कवि की दूसरी नोटबुक, समकालीनता और साहित्य, राजकमल प्रकाशन, पहला संस्करण, २०१०

10. पी.रवि, समकालीन कविता के आयाम, लोक भारती प्रकाशन, संस्करण, २०१३-१४

11. चतुर्वेदी, डॉ. रामस्वरूप, हिंदी काव्य का इतिहास, लोक भारती प्रकाशन, संस्करण, २०११

12. नवल, नंदकिशोर, कविता अभी बिलकुल अभी, राजकमल प्रकाशन, पहला संस्करण, २००४

13. नवल, नंदकिशोर, आधुनिक हिंदी कविता का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, पहला संस्करण, २०१४

14. डॉ. मोहन, समकालीन कविता की भूमिका, अनंग प्रकाशन, प्रथम संस्करण, २००५

15. श्रीवास्तव, परमानंद, कविता का अथार्त, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण, २००८

16. देवताले, चंद्रकांत, खुद पर निगरानी का वक्त, वाणी प्रकाशन दिल्ली, १९८५

17. सिंह, केदारनाथ (संपादक), त्रिलोचन (प्रतिनिधि कविताएं), राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली, १९९६

18. सिंह, केदारनाथ मेरे समय के शब्द, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, १९९३

19. कमल, अरुण, अपनी केवल धार, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, १९९९

20. कमल, अरुण, नए इलाके में, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, १९९६

पत्र पत्रिकाओं की सूची

1. वागर्थ अंक, २००९, एकांत श्रीवास्तव, कुसुम खेमानी, भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता

2. पहल ९२, ज्ञानरंजन, राजकुमार केसवानी, जबलपुर

3. आशय, वी.के. सौनकिया, दिगंत प्रकाशन, कानपुर

4. आलोचना, परमानन्द श्रीवास्तव, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

5. आधारशिला, वीरेन डंगवाल विशेषांक, २०१७, वीरेन डंगवाल-सृजन और विवेचन, दिल्ली

6. वर्तमान साहित्य (अतिथि सं. लीलाधार मंडलोई), मई-जून २०००, शताब्दी विशेषांक

7. तद्भव

8. पूर्वग्रह

9. समकालीन जनमत